VANA MITRA
NAGARVASI GRAMAVASI VANAVASI - HUM SAB BHARATHAVASI

प्रेरणा

कर्मयोगी मा. भास्करराव कलंबी

–निशिकांत जोशी

असम का प्रवास समाप्त कर मा. भास्करराव नागालैंड के दीमापुर पहुँचे थे। असम के प्रवास में ही स्वास्थ्य कुछ खराब हुआ था। शायद बुखार भी था। दूसरे दिन टेनिंग के लिए निकलना था। जीप से जाना पड़ेगा, रास्ता खराब, न्यूनतम 7-8 घण्टे लगेंगे, अधिक भी लग सकता है। वहाँ कोई कार्यक्रम नहीं था केवल वहाँ के कार्यकर्ताओं से मिलने हेतु जाना था। हम सबने सोचा स्वास्थ्य के खराब स्थिति में टेनिंग जाने के बजाय वहाँ के कार्यकर्ताओं को दीमापुर बुला लेते हैं। मिलना और बातचीत हो जाएगी। डरते-डरते मा. भास्करराव के सामने प्रस्ताव रखा, वे बोले 'ठीक है, पर दीमापुर क्यों "why not Guwahati" तो दीमापुर आने का कष्ट भी मुझे नहीं होता। और अच्छा होता मुंबई ही बुला लेते'। कार्यकर्ता एकदम चुप। फिर बोले, 'कार्यकर्ता को उसके कार्यक्षेत्र में जाकर मिलना चाहिए, तो वहीं उसकी परिस्थिति, कष्ट, उसकी कार्यशैली समझ आती है। कार्यकर्ता अपने कार्यक्षेत्र में अकेला होता है वहाँ जाकर उसकी पूछताछ करना, समस्या समझना, उसका मनोबल-उत्साह बढ़ाना यह ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है'।

कार्यकर्ताओं से संवाद यह उनकी प्राथमिकता थी। उसमें वे कभी थकते नहीं थे। एक बार बस्तर के बारसूर में उनका प्रवास था। वनवासी सम्मेलन का आयोजन था। प्रातः 9 बजे से विभिन्न कार्यक्रम प्रारंभ हुए जिसकी समाप्ति रात करीब 10 बजे हुई। हम लोग थककर चूर थे। 10 बजे सो गये। रात को 2 बजे नींद खुली तो देखा कि मा. भास्करराव वहाँ के 10-12 महिला कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर बातें कर रहे थे। उनका स्वभाव, मनस्थिति कार्य में आने वाली समस्यायें समझकर उनका उत्साह बढा रहे हैं।

एक बार भास्करजी को पूछा कि एक सामान्य कार्यकर्ता के साथ आप 3-4 घण्टों तक बात करने का समय कैसे निकल पाते हैं? उन्होंने कहा की कार्यकर्ता का मन रेडियो नहीं होता कि बटन दबाते ही खुल जाये। उसे खुलने के लिए समय देना पड़ता है। एक-आधा घण्टा इधर-उधर की बातें करने पर ही वह खुलकर अपनी समस्याएँ बताने की मनस्थिति में आता है।

मा. भास्करराव प्रवास से मुंबई जिस दिन पहुँचने वाले हों शाम से ही मुंबई में रहने वाले केरल के कुछ युवक कल्याण आश्रम के कार्यालय में आकर बैठ जाते थे। और महिना भर के प्रवास से थककर आये भास्करराव जी उनके साथ रातभर बातचीत करते रहते थे।

भास्कर राव जी कहते थे – 'वनवासी से सहज भाव से एकरूप होकर स्नेह से जुड़े। उन्हें सुधारने का भाव लेकर वनक्षेत्र में नहीं जाना। वहाँ वनवासी जैसा ही रहना, खाना, सोना, व्यवहार करना हो तो ही आत्मीयता निर्माण होगी और आप उनके बीच कार्य कर पाएंगे। कार्य में आनंद की अनुभूति होनी चाहिए। प्रसन्न चित्त से कष्ट सहन करते हुए निष्ठापूर्वक कार्य करते रहने से सफलता अवश्य मिलेगी'।

अनेक परिवारों से आत्मीयतापूर्ण पारिवारिक सम्बन्ध होने के कारण अनेक भेंट वस्तुएँ उन्हें प्राप्त होती रहती थी। और वे उसे अपने पास न रखकर जिसे भी पसंद हो दे देते थे। वे कहते थे ज्येष्ठ कार्यकर्ता को अनेक कीमती वस्तुएँ भेंट स्वरुप मिलती हैं। उन्हें देखकर सामान्य कार्यकर्ता का जी ललचाता है। उसे यह वस्तु मेरे पास भी होना चाहिए, मुझे भी यह आवश्यक है ऐसा लगता है। न मिलने पर मानसिक कष्ट भी होता है। इसलिए ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं को ऐसी कीमती वस्तुएँ अपने पास नहीं रखना चाहिए।

एक बार एक ज्येष्ठ कार्यकर्ता ने एक कार्यकर्ता के आर्थिक व्यवहार पर उसी के

प्रेरणा

सामने टिप्पणी की साथ में यह भी कहा मुझे यह भास्करराव ने कहा है। प्रवास क्रम में भास्करराव जब उस कार्यकर्ता को मिले तो उसने पूछा की आपने मेरे बारे में ऐसा क्यों कहा? मा. भास्करराव ने कहा 'देखो, ऐसा मैंने कुछ कहा है यह मुझे याद नहीं है किस परिप्रेक्ष्य में कहा यह भी याद नहीं लेकिन तुम्हें दुःख हुआ इसलिए क्षमा मांगता हूँ। परंतु कार्यकर्ता को इतना संवेंदनशील नहीं होना चाहिए। किसी ने कुछ कहा इतने मात्र से मन विचलित न हो, आज अपने सम्बन्ध स्वाभाविक है-हम एक दूसरे से निःसंकोच बात कर सकते है। परंतु यदि मुझे लगा कि मेरे कुछ कहने मात्र से तुम नाराज हो सकते हो, तो मैं संभलकर बात करूँगा। अपने सम्बन्ध स्वाभाविक नहीं रहेंगे। उसमे नाटकीयता आएगी। यह उचित नहीं होगा'।

1983 में 74 वर्ष की आयु में उनकी शल्य चिकित्सा हुई। स्वास्थ्य लाभ होने पर उनके परिपक्व एवं समृद्ध अनुभवों का लाभ उठाने हेतु उन्हें 1984 में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के सह संगठन मंत्री का दायित्व सौंपा गया। 1985 में कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय संगठन मंत्री बने।

प्रारंभिक 2-3 वर्ष उन्होंने वनवासी समाज, कल्याण आश्रम की कार्यपद्धति समझने हेतु पूरे भारत का प्रवास किया। और उसके पश्चात ही प्रत्यक्ष कार्य प्रारंभ किया। उनके नेतृत्व में कल्याण आश्रम के अनेक आयाम प्रारंभ हुए। युवाओं को जोड़ने हेतु खेलकूद प्रकल्प आरम्भ हुआ। धर्म जागरण का कार्य चल रहा था। उसे व्यवस्थित रूप देने हेतु श्रद्धा जागरण का आयाम प्रारंभ हुआ। लोककला, जनजाति हितरक्षा, चिकित्सा आदि आयामों को व्यवस्थित रूप दिया।

उत्तर-पूर्वांचल की समस्याओं पर उनका ध्यान अधिक था। केरल से अनेक कार्यकर्ताओं को उन्होंने कार्य हेतु उत्तर-पूर्वांचल में जाने के लिए प्रेरित किया। वे भी वहाँ जाकर वहीं के हो गये 2000 तक उनके अथक प्रयासों से कल्याण आश्रम का कार्य सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी होने की दिशा में बढ़ा। 2000 के बाद उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा।

मा. भास्करराव कुशल संगठक थे। छोटे से लेकर बड़े सभी कार्यकर्ताओं के साथ उनका सतत संवाद रहता था। उनका संवाद केवल कल्याण आश्रम के कार्य तक सीमित नहीं था। कार्यकर्ता को आने वाली कठिनाइयों को समझकर, उसके सुख-दुःख की चिंता कर, उसकी समस्याएँ सुलझाने का प्रयत्न करते थे। कार्यकर्ताओं को विश्वास था कि अपनी समस्याएँ मा. भास्करराव जी को बताने पर निश्चित रूप से उनका समाधान होगा। कार्यकर्ता को कार्यक्षेत्र में छोड़ देना और दूर से देखते रहना सागर में उतार देना परन्तु तैरना सीखने तक डोर पकड़ के रखना यह उनकी विशिष्ट कार्यपद्धति थी। दायित्व देने के बाद वे कार्यकर्ता को स्वतंत्र रूप से कार्य करने देते थे और समस्या आने पर उसके पीछे खड़े रहते थे। कार्यकर्ता के पूछने पर ही वे अपना मार्गदर्शन देते थे। उन्होंने महिला कार्य का महत्व समझकर उसकी ओर ध्यान दिया। महिला कार्यकर्ताओं की मर्यादाएँ वे समझते थे। उनकी सब प्रकार से चिंता कर उन्होंने उनका उत्साह बढ़ाया। परिणाम स्वरुप महिला कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ी। ग्रामीण महिला कार्यकर्ता खड़ी हुई। महिला कार्य ग्राम-ग्राम तक पहुँचा।

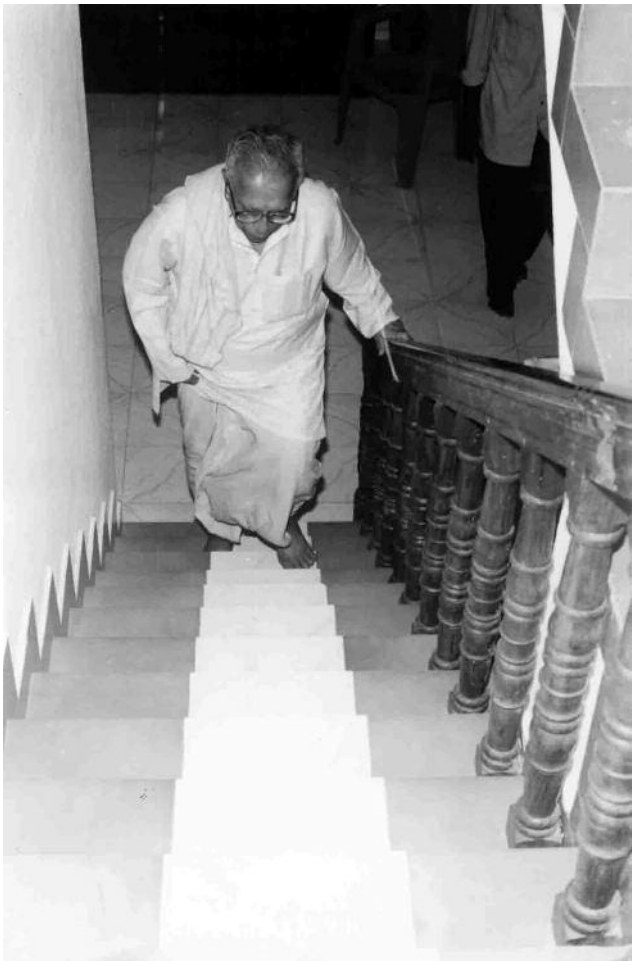

मा. भास्करराव ने वनवासी संस्कृति, संस्कार परम्परा के संवर्धन पर बल दिया। वनवासी की श्रद्धा, संस्कृति परम्परा को संरक्षण करते हुए उनका विकास हो ऐसा उनका मत था। वे कहते थे - 'वनवासी से सहज भाव से एकरूप होकर स्नेह से जुड़े। उन्हें सुधारने का भाव लेकर वनक्षेत्र में नहीं जाना। वहाँ वनवासी जैसा ही रहता, खाना, सोना, व्यवहार करना हो तो ही आत्मीयता निर्माण होगी और आप उनके बीच कार्य कर पाएंगे। कार्य में आनंद की अनुभूति होनी चाहिए। प्रसन्न चित्त से कष्ट सहन करते हुए निष्ठापूर्वक कार्य करते रहने से सफलता अवश्य मिलेगी'।

Bangalore Samitee karyakartas and their family members visited Nanjangud temple along with girl students from Mysore hostel.

Vanasuma brand lanuched by Vanavasi Kalyana Karnataka Natural Prodcuts.

https://mybillbook.in/store/suposhana

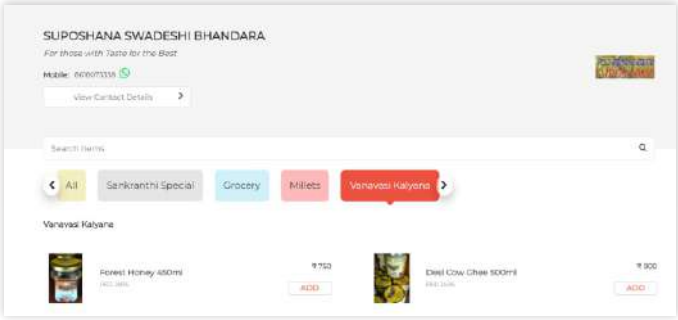

Namaste all - please find link above where you can place order for tribal products which Vanavasi Kalyana is promoting under the brand name of "Vanasuma". We can ourselves buy and share with friends, relatives, neighbours etc. This will help to financially empower tribal community and also profit will be used for running Vanavasi Kalyana service projects.

7 out of 8 athletes from Siddi community won medals at Jayan Boxing Championship tournament at Pondicherry. Just a beginning...

Health camp Feb 2022

Ayushman Bharat card camp at Irruligaradoddi and Kutgal :- Total 65 cards were distributed to the Vanavasi bhandhus.

Book launch of "Pradeepa" Hindi version at Nagpur. A book on Sri Prakash Kamat ji – who laid foundation of Vanavasi Kalyana work in Karnataka.

Mithun Krishna Visit to VVK Hostel:- Mithun visited the VKK hostel on 6th March Kumta, Uttara kannada district.Every month first sunday VKK conducts varga for Girls Trainers at Saraswati Vidya Mandir. Here they get training for personality development, Class Coaching,Activities, Bhajan and Games. On 6th March , they had a One hour yoga session and Pranayama. Whenever you visit Uttara kannada, try to attend the monthly varg !!!

President Of India presented Nari Shakti Puraskar to Ushaben Dineshbhai Vasava for her contribution in organic farming. As a tribal activist in Gujarat, she has ensured land entitlements to 500 women. She provides training on fertiliser use & tech-based farming to women farmers.

Ayushman Bharath Health Card Camp by Vanavasi Kalyana Karnataka (VKK) Sponsored by General Motors

- **Camp organized for providing Ayushman Bharath Arogya Karnataka Health Card**
- **Ayushman Bharath Health card benefits are:**
  - It is the world's largest medical insurance scheme that is financed by the Govt. of India
  - It covers close to 1,393 procedures including the treatment cost, room charges, doctor's fees, Operation theatre, ICU, diagnostic services, surgeon charges, etc.

- 3 days of pre-hospitalization cover is for 3 days and post-hospitalization cover is for 15 days including medicines and diagnostics

- **On 8th March 2022 at**
  - Chamundipura
  - Motakayyana Doddi

- **Total 57 cards distributed to beneficiaries**

- **On 9th March 2022**
  - Muniyappa Doddi
  - Mayagana Halli
  - Gangaraja Halli

- **Total 54 cards distributed to beneficiaries**

SABAL Programme

Name	Gender	Course Studying	Institution
Sakkubai Doyipade	Female	Nursing - 1st Year	KLE, Dandeli
Sapnesh Sadanad Velip	Male	BCA 2nd Year	
Manjula Akku Tate	Female	Nursing - 2nd Year	GNM Nursing College, Dandeli
Savitri Bairu Katrat	Female	Nursing - 2nd Year	GNM Nursing College, Dandeli
Kalmesh Kailas Bhopalpur	Male	3rd Standard	Vishwadarshan English Medium School, Yellapur
Sindhu Kailas Bhopalapur	Female	5th Standard	Vishwadarshan English Medium School, Yellapur
Mamitkumar Vittala Marathi	Male	BPT	KG Institute of Physiotherapy, Bangalore

Students sponsored through SABAL in march month. Money was transferred on 23rd march. With this total number of students supported through Sabal this year is 69 and out of them, 44 are girls.

"Warli" Painting @ Patashala (Jaigopal Garodia Rashtrotthana Vidyalaya (JGRV) *by Girish Kale*

The Janjati art originated from Kokan prant of Maharashtra. It is not only the expression of rich heritage of janjati culture but it's reflection of our civilization. From day to day activities, including agricultural tasks, animals, bamboo huts etc., to celebration of joyful festivals and community gatherings, everything is covered in this versatile form of tribal art. In the last few decades, this has become globally popular and is being studied as a special subject by art lovers.

Akhil Bharatiya Vanvasi Kalyan Ashram is actively involved in protection and progression of this magnificent art form through several activities. Lok-kala aayam of Kalyan ashram is focusing on preservation, promotion and progression of all tribal arts forms. This rich cultural legacy, survived through hundreds and thousands of years of devotion, should not vanish at any cost and that's the motto of Lok-kala aayam.

Swami Vivekananda had said: "We want that education by which character is formed, strength of mind is increased, the intellect is expanded, and by which one can stand on one's own feet". The first step of forming the character of a person starts from childhood, during the schooling. व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण is the basis of character development of any nation and hence childhood is the ideal stage to inculcate nationalist thoughts. Similarly, the cultural legacy to be passed upon to next generation for preserving and progressing the art,also needs to be inculcated from childhood.

Working on the idea, Kalyan ashram volunteers from Bangalore, were in discussion for activities for students at Jaigopal Garodia Rashtrotthana Vidyalaya (JGRV) and the idea of beautification of the school premises with tribal art, the Warli painitng, came up. Gayatri ji, Principal of JGRV, not only supported the idea but ensured that all students and staff members whole-heartedly participate in this once in a lifetime opportunity. Pradip ji Kakad from Kalyan ashram with support from Mayuresh ji Phadke led this entire activity. The work, which initlally was planned for 3 wall segments at the school entrance is now extended to all possible locations in the school premises. While initially the drawing was made by Pardip ji and JGRV students and staff colored them, now the students themselves are making Warli drawing as well as painting under supervision of Kalyan ashram volunteers.

I was fortunate to see this transformation during recent Bangalore visit. Gayatri ji was so overwhelmed with response she received from school management, students and especially from all the parent. The message shared by parents was that due to this transformation, we feel so positive and energized when we come to school to drop our children. Many parents

consulted the staff and tried to understand more details about this traditional art which otherwise was unknown to most of the urban population around.

This special activity, carried out by JGRV and Kalyan ashram, has made a positive change in lives of all the students, parents and staff of the school as well as Kalyan ashram volunteers. This is a wonderful example where a team with a positive thought of preservation and promotion of janjati art and equally supported and executed by enthusiastic team has not only changed the school aesthetics but this has actually initiated a movement of preservation of our cultural heritage.

After seeing the delighted faces of the students involved in this activity, I'm confident and assured about preservation and progression of this beautiful janjati art form, Warli.

Similar to Lok-kala aayam, Kalyan ashram is working tirelessly in several different fields for last seven decades and have been instrumental in making a positive change in the janjati areas of our great nation. Kalyan ashram motto, तू मैं एक रक्त, reflects the vision for the work being carried out and am delighted to witness it practically through the activities at JGRV Bangalore.

विश्व महिला दिवस विशेष

जनजाति समाज में परिवर्तन लाने वाली आंध्र प्रदेश की अचम्मा...

जनजाति समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए कार्यरत वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य में महिलाओं की सहभागिता महत्वपूर्ण है। देश के विभिन्न स्थानों पर कल्याण आश्रम की महिला कार्यकर्ता समर्पित भाव से सामाजिक कार्य में जुटी हुई हम देख सकते है। सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत आंध्र प्रदेश की अचम्मा ऐसा ही एक नाम है।

अचम्मा कल्याण आश्रम के आंध्र प्रदेश इकाई की सक्रिय कार्यकर्ता एवं प्रांत की महिला प्रमुख है। आंध्र के विशाखापट्टनम जिले के मठम क्षेत्र की रहने वाली अचम्मा आज केवल कल्याण आश्रम की कार्यकर्ता नहीं रही तो वह इस क्षेत्र के संपूर्ण जनजाति समाज का एक प्रमुख आधार बन गई है। 1977 के बाद देश के संपूर्ण जनजाति क्षेत्र में कल्याण आश्रम का काम अत्यंत प्रतिकूल अवस्था में शुरू हुआ। विभिन्न कार्यकर्ताओं ने जनजाति समाज की सर्वांगीण प्रगति का लक्ष्य लेकर सुदूर वनों - पर्वतों में सेवा के माध्यम से इस कार्य की शुरुआत की। जिन शुरुआती कार्यकर्ताओं ने यह कठिन कार्य प्रारंभ किया उनके धैर्य,साहस और संयम की परीक्षा लेने वाले वह दिन थे। दक्षिण के आंध्र प्रदेश में भी जनजाति समाज की संख्या काफी बड़ी है । इसी क्षेत्र में कार्य प्रारंभ करने का श्रेय स्वर्गीय श्रीधर जी को जाता है। श्रीधर जी संघ के ऐसे कर्मठ प्रचारक थे, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थिति में कल्याण आश्रम के कार्य की नीव रखी थी। श्रीधर जी का और कुल मिलाकर कल्याण आश्रम के कार्य का प्रवास इसी मठम गाँव में शुरू हुआ था।

मठम गांव में श्रीधर जी जब पहली बार गए तब गांव के लोगों ने उनको गांव में प्रवेश करने से रोका था। भोले भाले वनवासियों का ऐसा डर था कि यह बच्चों को भगा ले जाने वाला या काली जादू करने वाला जादूगर तो नहीं? लेकिन अपने संगठन कुशलता के आधार पर

श्रीधर जी ने कुछ ही समय में जनजाति बंधुओं का दिल जीत कर इस गांव में प्रवेश कर ही लिया। आंध्र प्रदेश की दृष्टि से देखा जाए तो मठम को कल्याण आश्रम के कार्य की गंगोत्री कहा जा सकता है।

सबसे पहले जिस घर में वे रुके वह घर था अचम्मा के पिता का। उस समय अचम्मा मात्र सात बरस की थी। श्रीधर जी के साथ शाम को छोटे-छोटे बच्चे एकत्रित होकर विभिन्न खेल खेलते थे। अचम्मा भी इन्हीं बच्चों के साथ खेल का आनंद लेती थी। श्रीधर जी के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव छोटी अचम्मा पर पड़ता गया और वह भी धीरे धीरे इस कार्य में सहयोगी बनने लगी।

ईश्वर ने अचम्मा को मीठी आवाज के रूप में एक सुंदर उपहार दिया था। इसी कारण विभिन्न भजन या लोकगीत सुंदर स्वरों में गाना उनकी एक विशेषता मानी

विश्व महिला दिवस विशेष

जाती है। इसी का उपयोग कर जनजाति गांव गांव मैं जाना, उनको सुंदर भजन सुनाना और उनको भी गाने के लिए प्रोत्साहित करना उनका स्वभाव बन गया। महिलाओं को संगठित करने के लिए उनके इस गुण का बहुत बड़ा लाभ हुआ। इसी माध्यम से उन्होंने सैकड़ों गांव में अच्छे-अच्छे पारंपरिक लोक गीत या भजन गाने वालों की विभिन्न टोलियां बनाई। आज लगभग ऐसे 300 गांव में अचम्मा के प्रयत्नों से भजन मंडली का निर्माण हुआ है। जिससे इस संपूर्ण क्षेत्र के वातावरण में एक अच्छा बदलाव दिख रहा है।

महिला प्रमुख होने के नाते महिलाओं के लिए भी उन्होंने बहुत सराहनीय काम किया है। विभिन्न गांवोमें महिलाओं से संपर्क कर उनकी समिति बनाना, उनको संगठित करना उनका एक प्रमुख काम है। पिछले लगभग 25 सालों से अचम्मा जी का यह काम अविरत चल रहा है। मठम में चल रहे कल्याण आश्रम के बालिका छात्रावास की अचम्मा एक प्रमुख आधार है। उनके विश्वास पर ही बालिकाओं के अभिभावक आनंद से अपनी बेटियों को आश्रम में भेजते हैं। अपने कार्य के माध्यम से उन्होंने निर्माण किया हुआ विश्वास ही इसका प्रमुख कारण है। समाज की समस्या समझ कर उनको सुलझाने के लिए प्रयासरत रहने के कारण उनकी संपूर्ण क्षेत्र में एक सम्मानित सामाजिक कार्यकर्ता के नाते पहचान हुई है। अचम्मा जनजाति समाज कि एक प्रमुख आधारस्तंभ बन गई है।

अचम्मा जैसी सैकड़ों महिला कार्यकर्ता वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से सुदूर जनजाति क्षेत्र में समाज की प्रगति में अपना योगदान दे रही हैं। आज 8 मार्च, विश्व महिला दिवस। इस अवसर पर हम समाज के लिए योगदान देने वाली संपूर्ण नारी शक्ति को शत शत नमन करते हैं।

तू - मैं एक रक्त

वनवासी कल्याण आश्रम - अखिल भारतीय नगरीय कार्यशाला
रामभाऊ महाल्गी प्रबोधिनी सभागार, केशव श्रृष्टि परिसर, मुंबई
25-26 दिसंबर 2021

श्री भगवान सहाय जी ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण की साधना में लगे सभी कार्यकर्ताओं का तीन महत्वपूर्ण विषयों पर अलग अलग प्रशिक्षण वर्ग लिया:

- **नगरीय कार्य का उद्देश्य**
- **नगरीय कार्य पद्धति**
- **नगरीय कार्य का विस्तार**

दया नहीं दायित्व और करूणा नहीं कर्तव्य बोध से कार्य !

तू - मैं एक रक्त

वनवासी कल्याण आश्रम - अखिल भारतीय नगरीय कार्यशाला
रामभाऊ महाल्गी प्रबोधिनी सभागार, केशव श्रृष्टि परिसर, मुंबई
25-26 दिसंबर 2021

I) नगरीय कार्य का उद्देश्य: नगरीय कार्य का उद्देश्य केवल धन धान्य साधन संग्रह मात्र ही नही बल्कि एक बड़ी सोच और विस्तृत द्रष्टि देना है:

व्यक्ति संग्रह - समाज के अनुभवी लोगों को सेवा कार्यो से जोड़ना। उदाहरण स्वरूप सेवा निवृत्त होने के पश्चात छात्रावासों में कार्यकर्ता के रूप में जोड़े जा सकते हैं। कोई शिक्षाविद शिक्षा आयाम से जोड़ा जा सकता है। अधिवक्ता को हितरक्षा आयाम से, पत्रकारों को प्रचार-प्रसार आयाम से जोड़ा जा सकता है। ऐसे ही विविध विषयों पर नगर के बुद्धिधन का उपयोग ग्रामीण कार्य के लिए किया जा सकता है।

वनवासी की सही प्रतिमा स्थापित करना हमारा परम उद्देश्य है। वनवासियों में कर्तव्य निष्ठा व सशक्त होने के भाव को बल देना। तू मैं एक रक्त के ध्येय को चरितार्थ करना।

नगरीय जनजाति बन्धुओं से संपर्क - लगभग 20% वनवासी समाज नगरों में आकर रह रहा है। इन बन्धुओं से 5 S फार्मूला के अंतर्गत - संपर्क - संवाद - साहित्य - संगोष्ठी - सद्विचार पर जोड़ना।

प्रशासनिक संपर्क - जैसे कि जनजाति आयुक्त, कलेक्टर व एस पी से संपर्क बनाकर रखना ताकि आवश्यकतानुसार अपनी बातों को उन तक पहुँचाया जा सके।

मजबूत समर्थक समूह एवं मजबूत आपूर्ति सेवा समूह स्थापित करना: मजबूत समर्थित समूह यानी वैचारिक दृष्टि से ज्यादातर लोग हमारे साथ खड़े हो ताकि हमारे विचार का विस्तार हो सके और मजबूत आपूर्ति सेवा यानी कार्य और कार्यकर्ता विस्तार हो सके दीपक में तेल आपूर्ति होती रहेगी तो वो जलता रहेगा और जलेगा तो प्रकाश अवश्यम्भावी है अपनेपन ओर आत्मीयता के स्नेहन से कर्यकर्ता को ओर साधन सहयोग आपूर्ति से प्रकल्प को मजबूत करने का कार्य करना है।

विदेशों में संपर्क - विदेशों में रहने वाले भारतीय - हमारे मित्र, रिस्तेदार, पड़ोसी व पहचान के लोगों कि सूची बनाना और अपने सेवा कार्यों से जोड़ना।

दया नहीं दायित्व और करूणा नहीं कर्तव्य बोध से कार्य *!*

वनवासी कल्याण आश्रम - अखिल भारतीय नगरीय कार्यशाला
रामभाऊ महाल्गी प्रबोधिनी सभागार, केशव श्रृष्टि परिसर, मुंबई
25-26 दिसंबर 2021

II) नगरीय कार्य पद्धति की चार प्रमुख बिन्दुएँ :

- **समितियों की रचना**
- **समितियों का स्वरूप**
- **समितियों की सक्रियता हेतू प्रयास**
- **नियमित बैठक / प्रशिक्षण**

समितियों की रचना के समय उसके सदस्य का चरित्र संवेदनशील व निःस्वार्थ भाव का हो, कार्य मे रूचि रखने वाला हो, संपर्क करने कि योग्यता और समय देने वाला हो, इसके साथ ही मध्यम आयुवर्ग के हों और विविध कार्यक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हों।

समितियों का स्वरूप: कम से कम 7 और अधिक से अधिक 21 संख्या हो, प्रारम्भ से ही महिला - युवा - जनजाति का प्रतिनिधित्व रहे, महानगरों में उपसमितियों की रचना अवश्य करें, समिति के सभी सदस्यों कोई न कोई दायित्व अवश्य दें, 2 /3 वर्षों में समितियों का पुनर्गठन अवश्य हो, समिति में डाक्यूमेंट करने वाला व्यक्ति भी हो।

समितियों की सक्रियता हेतू प्रयास: वार्षिक योजना अवश्य बनाना और इसके अंतर्गत दो कार्यक्रम नगर से नगर में, दो कार्यक्रम नगर से वनक्षेत्र में और दो कार्यक्रम वनक्षेत्र से नगर में, वस्तु संग्रह/ धन संग्रह को अभियान के रूप में लेना, विविध प्रकार के कार्यक्रम - उपक्रम - नवीन प्रयोग करना।

नियमित बैठक / प्रशिक्षण: साल में कम से कम एक बार निवासी वर्ग हो, और मासिक बैठक अवश्य हो, बैठक में कार्यकर्ता विकास- कार्य पद्धति- वैचारिक अधिष्ठान- धन संग्रह आदि विषयों पर बैठक हो, आधुनिक तकनीक के उपयोग हेतू प्रशिक्षण करना।

दया नहीं दायित्व और करूणा नहीं कर्तव्य बोध से कार्य !

तू - मैं एक रक्त

वनवासी कल्याण आश्रम - अखिल भारतीय नगरीय कार्यशाला
रामभाऊ महाल्गी प्रबोधिनी सभागार, केशव श्रृष्टि परिसर, मुंबई
25-26 दिसंबर 2021

II) नगरीय कार्य का विस्तार:

- कार्यकर्ता का विस्तार
- कार्य का विस्तार
- आर्थिक संग्रह का विस्तार

कार्यकर्ता का विस्तार के अंतर्गत नए कार्यकर्ताओं को छोटे छोटे दायित्व देना, उन्हें अपने काम से जोड़ना, व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने के लिए प्रेरित करना। focused campaign करने कि अनिवार्यता रखना। हरेक कार्यकर्ता का परम उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह एक - दो परिवारों को कार्यक्रम में ला सके।

कार्य का विस्तार में नगर, महानगर व प्रांत स्तर पर mapping करना और उपसमिति को कार्य करने की जिम्मेदारी देना। रुचि अनुसार कार्यकर्ता को कार्य सौंपना। बड़े apartment complex को focus करना। Ward wise कार्य का विस्तार करना। छोटे छोटे क्लब या associations को अपने साथ जोड़ना।

आर्थिक संग्रह का विस्तार: शुभ अवसरों जैसे कि त्योहार, जन्म दिवस, सालगिरह आदि पर धन संग्रह। साहित्य और audio visuals के माध्यम से लोगों तक संपर्क स्थापित कर धन संग्रह करना। payment gateway का उपयोग करते हुए आर्थिक संग्रह। अपने परिचय में कल्याण आश्रम का भी परिचय व दायित्व बताना।

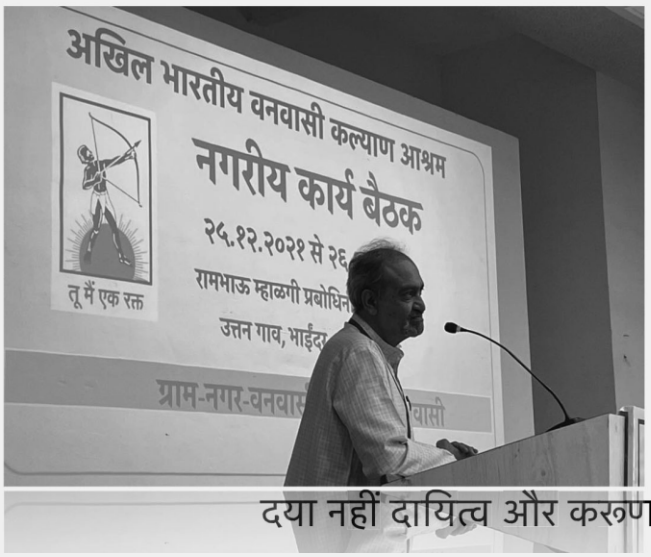

दया नहीं दायित्व और करुणा नहीं कर्तव्य बोध से कार्य !

QUIZ

TIME TO TAP YOUR MEMORY...

BY M. ASHOK

01) Name of the Prince Swami Vivekanada met at Alwar?

02) Who gave letters of introduction to Chairman of the committee for selection of delegates in the parliament of religious for Swami Vivekananda?

03) In which year Parliament of World's Religions was held at Chicago?

04) Where did Swami Vivekananda represented India as it delegate and in which meet?

05) In which hall the first session of the Chicago parliament of religions was opened?

06) Who were the delegates participated in the first session of the Chicago parliament represented by BrahmoSamaj?

07) Who was the representative from the Buddhists of Ceylon in the first session of the Chicago parliament of religions?

08) Who were the delegates participated in the first session of the Chicago parliament represented by Theosophy from India?

09) Swami Vivekanada earned wild applause for beginning his address at the World Parliament of Religions with the famous words...

10) Which Association in New York invited Swami Vivekanada for series of lectures?

Answers:

01) Prince Mangal Singh
02) Professor J.H.Wright
03) 1893
04) Chicago, Parliament of Religions
05) The great hall of Columbus
06) Pratap Chandra Majumdar
of Benagal and Nagarkar
of Bombay
07) Dharmapala
08) Chakrvarty and
Mrs. Annie Besant
09) "Sisters and Brothers of America"
10) Brooklyn Ethical Association

SPONSORSHIP DETAILS

- All donations are exempt from Income Tax under Section 80G of IT Act 1961
- One can make bank transfers as per below account details
- Donations can also be made through crossed cheques
- For 80G receipts, contact **Mr.Keshava +91-94829 84575**

India Resident Accounts

Account Name:	Vanavasi Kalyana
SB Account number:	04212160000078
IFSC code:	CNRB0011717 (For NEFT/RTGS Transations)
IFSC Code:	CNRB0000033 (For IMPS Transaction)
Bank:	Canara Bank
Branch:	Kuvempunagar II, Mysore 570 001
Address:	834, New Kantharaja Urs Road, Kuvempunagar, Mysore.
Branch Phone:	0821 2342 425
Branch Cell Phone:	94498 60428

About VanaMitra

This is an attempt to provide information on the work done by Vanvasi Kalyan Karnataka and to create awareness for the comprehensive development of the tribals of Karnataka. You too can participate as a volunteer. Send your feedback to the editorial board:

VanaMitra Editorial Team:
Sripad Ji, M.Ashok, Mayuresh, Vivek

Reach Vanamitra Team at:

vanamitra@vanavasikalyana.org | www.vanavasikalyana.org

For internal circulation only